

संक्षिप्त हवन पद्धति

कर्मकाण्डियों के अनुसार हवन के बिना पूजा का कोई विधान नहीं है। हवन को किसी भी साफ—सुथरी जगह पर सीमित संसाधनों की उपलब्धता में भी किया जा सकता है। यज्ञ साधनों में समिधा, सामग्री, अग्नि, कपूर, गौघृत आदि घरेलू वस्तुएं उपयोग में लाई जाती है। समिधा के तौर पर आम की लकड़ी की उपलब्धता पर शंका बनी रहती है। अतः ऋषियों ने शास्त्रों में दूध वाले पेड़ की लकड़ी को यज्ञ के लिए उपयोगी माना है क्योंकि इन लकड़ियों के जलने के बाद सीधे तौर पर राख ही बनती है जबकि अन्य वृक्षों की लकड़ियों से कोयला बनता है जो कि हवन के लिए शुभ नहीं है या अच्छा नहीं माना जाता। आम की लकड़ी कम मात्र में कार्बनडायाक्साईड उत्पन्न करती है और अत्यन्त ज्वलनशील होने के कारण हल्की सी हवा करने पर भी जलने लगती है। आम की लकड़ी के जलने से फार्मिक एल्डिहाइड नामक गैस उत्पन्न होती है जो कि खतरनाक बैक्टीरिया और कीटाणुओं को नष्ट करती है। अतः पर्यावरणानुरूप आम की लकड़ी को ही यज्ञ के लिए प्रयोग में लाया जाना चाहिये। यज्ञ 10 से 15 मिनट में भी किया जा सकता है। हवन सामग्री के लिए सबसे अधिक तिल, तिल से आधे चावल, चावल से आधे जौ, जौ से आधी शक्कर और घी इतना होवे कि सारी सामग्री उसमे भली प्रकार से मिल जावे। मेवा यथाशक्ति ले सकते हैं। अगर ऋतुफल भी उपलब्ध हो सकें तो अत्युत्तम है।

सर्वप्रथम निम्नलिखित मन्त्र के द्वारा तीन पुष्पगुच्छे हवन कुण्ड में रखकर अग्निदेव को आसन प्रदान करें।

आसन मन्त्रः

त्वामादिः सर्वभूतानां संसारार्णवतारकः।



COLLECTION OF VARIOUS
-> HINDUISM SCRIPTURES
-> HINDU COMICS
-> AYURVEDA
-> MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with

By
Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server!

 **KAPWING**



COLLECTION OF VARIOUS
-> HINDUISM SCRIPTURES
-> HINDU COMICS
-> AYURVEDA
-> MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

**Icreator of
hinduism
server!**



KAPWING

परमज्योतिरूपस्त्वमासनं सफलीकुरु ।।

प्रार्थना मन्त्रः

वैश्वानर नमस्तेऽस्तु नमस्ते हव्यवाहन ।

स्वागतं ते सुरश्रेष्ठ शान्ति कुरु नमोऽस्तु ते ।।

पाद्य मन्त्रः

नमस्ते भगवन् देव आपोनारायणात्मक ।

सर्वलोकहितार्थाय पाद्यं च प्रतिग्रह्यताम् ।।

अर्घ्य—मन्त्रः

नारायण परं धाम ज्योतिरूप सनातन ।

गृहाणार्घ्यं मया दत्तं विश्वरूप नमोऽस्तु ते ।।

आचमनीय मन्त्रः

जगदादित्यरूपेण प्रकाशयति यः सदा ।

तस्मै प्रकाशरूपाय नमस्ते जातवेदसे ।।

स्नानीय मन्त्रः

धनन्जय नमस्तेऽस्तु सर्वपापप्रणाशन ।

स्नानीयं ते मया दत्तं सर्वकामार्थसिद्धये ।।

अंगप्रोक्षण एवं वस्त्र मन्त्रः

हुताशन महाबाहो देवदेव सनातन ।

शरणं ते प्रगच्छामि देहि मे परमं पदम् ।

अलंकार मन्त्रः

ज्योतिषां ज्योतिरूपस्त्वमनादिनिधनाच्युत ।

मया दत्तमलंकारमलंकुरु नमोऽस्तु ते ।।

गन्ध मन्त्रः

देवीदेवा मुदं यान्ति यस्य सम्यक्समागमात् ।

सर्वदोषोपशान्त्यर्थं गन्धोऽयं प्रतिगृह्यताम् ।।

पुष्प मन्त्रः

विष्णुस्त्वं हि ब्रह्मा च ज्योतिषां गतिरीश्वर ।

गृहाण पुष्पं देवेश सानुलेपं जगद् भवेत् ।।

धूप मन्त्रः

देवतानां पितृणां च सुखमेकं सनातनम् ।

धूपोऽयं देवदेवेश गृह्यतां मे धनन्जय ।।

दीप मन्त्रः

त्वमेकः सर्वभूतेषु स्थावरेषु चरेषु च ।

परमात्मा पराकरः प्रदीपः प्रतिगृह्यताम् ।।

नैवेद्य मन्त्रः

नमोऽस्तु यज्ञपतये प्रभवे जातवेदसे ।

सर्वलोकहितार्थाय नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ।।

फिर अग्नि प्रज्जवलित करके ॐ आं अग्नये नमः से अग्नि पूजन पूर्ण करें ।

फिर ॐ आं अग्नये नमः उर्ध्वमुखो भव से अग्निदेव को उर्ध्वमुखी होने की प्रार्थना करें ।

तदनन्तर ॐ आं अग्नये नमः चैतन्यो भव से अग्नि के चैतन्य होने की भावना करें और निम्न प्रकार से आहुतियाँ प्रदान करें ।

अथः घृताहुतिः

ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम । इति मनसा त्यजेत् ।।

ॐ इन्द्राय स्वाहा, इदमिन्द्राय न मम । इत्याधारौ ।

ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये न मम । ॐ सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय न मम । इत्याज्यभागौ ।।

ॐ भूः स्वाहा, इदमग्नये न मम ।

ॐ भुवः स्वाहा, इदं वायवे न मम ।

ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय न मम ।

एता महाब्याहृतयः

ॐ परम तत्त्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः स्वाहा, इदं गुरुवे न मम ।

(यह गुरुमन्त्र है, इसके अलावा यदि आपको गुरुमन्त्र मिला हो आप उसके द्वारा भी आहुती दे सकते हैं)

ॐ विष्णवे स्वाहा, इदं विष्णवे न मम ।

ॐ शंभवे स्वाहा, इदं शंभवे न मम ।

ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा, इदं लक्ष्म्यै न मम ।

ॐ सरस्वत्यै स्वाहा, इदं सरस्वत्यै न मम ।

ॐ भूम्यै स्वाहा, इदं भूम्यै न मम ।

ॐ सूर्याय स्वाहा, इदं सूर्याय न मम ।

ॐ चन्द्रमसे स्वाहा, इदं चन्द्रमसे न मम ।

ॐ भौमाय स्वाहा, इदं भौमाय न मम ।

ॐ बुधाय स्वाहा, इदं बुधाय न मम ।

ॐ बृहस्पतये स्वाहा, इदं बृहस्पतये न मम ।

ॐ शुक्राय स्वाहा, इदं शुक्राय न मम ।

ॐ शनैश्चराय स्वाहा, इदं शनैश्चराय न मम ।

ॐ भैरवाय नमः स्वाहा, इदं भैरवाय न मम ।

ॐ राहवे स्वाहा, इदं राहवे न मम ।

ॐ केतवे स्वाहा, इदं केतवे न मम ।

ॐ व्युष्टयै स्वाहा, इदं व्युष्टयै न मम ।

ॐ उग्राय स्वाहा, इदं उग्राय न मम ।

ॐ शतक्रतवे स्वाहा, इदं शतक्रतवे न मम ।

ॐ वरुणाय स्वाहा, इदं वरुणाय न मम ।

ॐ स्थान देवताभ्यो नमः स्वाहा, इदं स्थान देवताभ्यो न मम ।

ॐ कुल देवताभ्यो नमः स्वाहा, इदं कुल देवताभ्यो न मम ।

ॐ ग्राम देवताभ्यो नमः स्वाहा, इदं ग्राम देवताभ्यो न मम ।

ॐ दश दिक्पालेभ्यो नमः स्वाहा, इदं दश दिक्पालेभ्यो न मम ।

इसके साथ ही दश महाविद्याओं को भी उनके मन्त्र के द्वारा आहुति प्रदान करें । परन्तु एक बात ध्यान रखने योग्य है कि महाविद्या मन्त्रों के अन्त में स्वाहा लगाकर आहुति नहीं दी जाती । इन्हें ज्यों का त्यों ही आहुति के लिए प्रयोग किया जाता है । अगर मन्त्र के साथ पहले से ही स्वाहा संलग्न हो तो अलग बात है ।

काली मन्त्र : क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्वाहा ।

तारा मन्त्र : ऐं ओं ह्रीं स्त्रीं हूं फट् ।

षोड़सी त्रिपुरसुन्दरी : ह्रींकएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ।

भुवनेश्वरी मन्त्र : ह्रीं ।

छिन्नमस्तका मन्त्र : श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वज्रवैरोचनीये हूं हूं फट् स्वाहा ।

त्रिपुरभैरवी मन्त्र : हसैं हसकरीं हसैं ।

मातंगी मन्त्र : ॐ ह्रीं क्लीं हूं मातंग्यै फट् स्वाहा ।

कमला मन्त्र : ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह सौः जगत्प्रसूत्यै नमः ।

धूमावती मन्त्र : धूं धूं धूमावती ठः ठः ।

बगलामुखी मन्त्र : ॐ ह्रीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय
जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्रीं ॐ स्वाहा ।

पात्र में सुपारी, नारियल, धी लेकर पूर्णाहुति प्रदान करें । इसके लिए
नारियल में सुराख करके उसमें उपरोक्त हवन सामग्री धी सहित भरकर
भी आहुति दी जाती है । जैसा आपको सुगम हो वैसा करें । पूर्णाहुति
सिर्फ एक ही होती है । जबकि अन्य आहुतियाँ प्रत्येक 5, 11 या 21 की
संख्या में या संकल्पानुसार दी जा सकती हैं ।

पूर्णाहुति मन्त्र:

ॐ मूर्ध्नि देवोऽरति पृथिव्या वैश्वानरमृतआजातमग्निम् ।
कविं सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा ॥
ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

तत्पश्चात् यज्ञदेव की आरती सम्पन्न करें ।

यज्ञदेव प्रभु हमारे, भाव उज्ज्वल कीजिए,
छोड़ देवें छल—कपट को, मानसिक बल दीजिए ।
वेद की बोलें ऋचाएं, सत्य को धारण करें,
हर्ष में हो मग्न सारे, शोक सागर से तरें ।
अश्वमेधादिक ऋचाएं, यज्ञ पर उपकार को,
धर्म मर्यादा चलाकर, लाभ दें संसार को ।
नित्य श्रद्धा—भक्ति से, यज्ञादि हम करते रहें,
रोग पीड़ित विश्व के, संताप हम हरते रहें ।
भावना मिट जाएं मन से, पाप अत्याचार की,
कामनाएं पूर्ण होवें, यज्ञ से नर—नार की ।



COLLECTION OF VARIOUS
-> HINDUISM SCRIPTURES
-> HINDU COMICS
-> AYURVEDA
-> MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

**Icreator of
hinduism
server!**

KAPWING



COLLECTION OF VARIOUS
-> HINDUISM SCRIPTURES
-> HINDU COMICS
-> AYURVEDA
-> MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with

By
Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server!

 **KAPWING**

लाभकारी हो हवन हर जीवधारी के लिए,
वायु जल सर्वत्र हों, शुभ गंध को धारण किए ।
स्वार्थ भाव मिटे हमारा, प्रेम पथ विस्तार हो,
इदं न मम का सार्थक, प्रत्येक में व्यवहार हो ।
प्रेमरस में मग्न होकर, वन्दना हम कर रहे,
नाथ करुणारूप करुणा, आपकी सब पर रहे ।

अन्त में अन्य आरतियाँ सम्पन्न करें ।
तदुपरांत हवनकुण्ड की प्रदक्षिणा कर प्रणाम करें और ऋतुफल, अन्य
प्रशाद व भोगादि वितरित करें व अपनी सामर्थ्यानुसार दानादि करें ।

जय गुरुदेव!